Question: न्याय के अनुसार ईश्वर के स्वरूप (Nature of God) की व्याख्या।

Ans: न्याय दर्शन आस्तिक (Orthodox) है। इसमें ईश्वर के स्वरूप तथा अस्तित्व से संबंधित युक्तियों का विशद वर्णन हुआ है। न्याय के ईश्वर-संबंधी विचार को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है —

[i] ईश्वर का स्वरूप और
[ii] ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण।

यहाँ हम न्याय के अनुसार ईश्वर का स्वरूप पर विशद चर्चा करेंगे।

नैयायिकों के अनुसार ईश्वर विश्व का निमित्त-कारण (Efficient cause) है न कि उपादान कारण (Material cause)। ईश्वर अणुओं से विश्व का निर्माण करता है। यह ईश्वर, ईश्वरवाद के सभी लक्षणों से युक्त है, लेकिन एक ही अन्तर है। ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर भौतिक कारणों का भी कारण है। परन्तु न्याय दर्शन के अनुसार ईश्वर भौतिक कारणों की सृष्टि नहीं करता। वह इन भौतिक कारणों (जैसे अणु आदि) को सजा-सँवारकर विश्व का निर्माण करता है।

ईश्वर विश्व का रचयिता, पालनकर्ता तथा आवश्यकता पड़ने पर इसका संहारकर्ता भी-

LAZINESS IS OFTEN MISTAKEN FOR PATIENCE.

Scanned with CamScanner

जाता है। ईश्वर एक है। वह नित्य, असीम तथा सर्वव्यापी है। न्याय का ईश्वर सर्वशक्तिशाली है। वह सर्वज्ञ तथा पूर्ण (perfect) है।

न्याय का ईश्वर सुन्दर और पूर्णतया निरपेक्ष है। न्याय के ईश्वर को षडैश्वर्य (six-perfection) से सम्पन्न माना जाता है। षडैश्वर्य में छह गुण रहते हैं:- आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य।

नैयायिकों के अनुसार ईश्वर विश्व का धर्म व्यवस्थापक भी कहा जाता है। जीवों को कार्य करने की इच्छा-स्वातन्त्र्य (Fredom of will) नहीं है। जीव ईश्वर की प्रेरणा पा कर ही अपने कर्म करते हैं। ईश्वर ही जीवों को अनेक अदृष्ट (अतीत संस्कार) के अनुसार कर्म करने तथा फल पाने की प्रेरणा देता है। इसी कारण ईश्वर जीवों के कर्मों का प्रयोजनकर्ता कहा जाता है।

इस प्रकार ईश्वर विश्व के मनुष्य तथा

अन्य जीवों का धर्म व्यवस्थापक, उनका कर्म फल दाता और उनके सुख तथा दुःख का निर्णायक है।

Scanned with CamScanner